दर्द आया है दबे पांव

बाल कृष्ण मुज़तर

दर्द आया है दबे पांव

बालकृष्ण मुज़्तर

1998
हक़प्रस्त प्रिन्टर्ज
कैथल

डिजाईनिंग एवं लेजर टाईप सैटिंग माध्यम प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड
मुद्रक : मीडिया प्रिन्टर्स, करोल बाग, नई दिल्ली

दर्द आया है दबे पांव

बालकृष्ण मुज़तर

मूल्य : दो सौ रुपये

प्रथम संस्करण 1998

प्रकाशक : हकपरस्त प्रिन्टर्ज कैथल

मुद्रक : मीडिया प्रिन्टर्स, करोल बाग, नई दिल्ली

निगारे - हस्ती
जीवन का सौन्दर्य

नाम	:	बालकृष्ण मुतजर
पिताश्री	:	पं. राजाराम भारद्वाज
पैदाइश	:	2 अक्तूबर, 1921
मुकाम	:	राजमहल ईस्टेट, कुरुक्षेत्र
तालीम व तरबीयत	:	लाहौर, देहली
शुगल	:	उर्दू, संस्कृत, हिन्दी व अंग्रेजी के तारीखी-अदबी समाजी औरसियासी अदब का मुतालया, ध्यान चिंतन

1937 में हसूले[1] तालीम के लिये लाहौर गया। उर्दू के मशहूर तनज[2] व मजांह निगार[3] जनाब प्रिंसिपल कन्हैयालाल कपूर के फैज[4] से नज्म[5] व नसर[6] के मुतालया[7] व लिखने का शौक पैदा हुआ, जो कुछ भी नज़्म[5] व नसर[6] मुझे आती है वह उर्दू अदब[8] की बरगज़ीदा[9] और साहिबे[10] क़लम हस्तियों शायरे मशरिक अलामा इकबाल, अलामा ताजवर नजीबाबादी, मौलाना अब्दुल मजीद सालिक, मौलाना सलाहुद्दीन अहमद एडीटर अदबी दुनियां, जनाब मीरा जी, डा. तासीर, जनाब फैज अहमद फैज, जनाब युसफ जंफर,

1. अध्ययन, 2. हास्य-व्यंग्य, 3. लेखक, 4, अनुग्रह, 5. पद्य, 6. गद्य, 7. अध्ययन, 8. साहित्य, 9. वयोवृद्ध, 10. लेखक

जनाब क्यूम नजंर, जनाब शौरिश काशमीरी, जनाब बेखुद देहलवी, जनाब हैदर देहलवी, अलामा कैफी, जनाब जिगर मुरादाबादी, जनाब अमन लखनवी, जनाब मुनव्वर लखनवी, जनाब गोपाल मित्तल, कंवर महेन्द्र सिंह बेदी सहर, जनाब ईबादत बरेलवी, जनाब प्रेमनाथ दर, जनाब नरेश कुमार शाद, जनाब खामोश सरहदी, जनाब तालिब पानीपती, जनाब आफताब पानीपती[4], जनाब रोशन पानीपती का करम, .फैज और ब.ख्शीश हैं।

इन बुजुर्गों की कुरबत[1], मेहनत और मशवरा[2] नीज़[3] हलकए अरबावे जोक वाई.एम.सी.ए. लाहौर की रुकनत[4] ने मेरा फन्नी[5] शऊर संवारा और निखारा, आल इंडिया रेडियो लौहार और देहली में स्क्रिप्ट राइटर रहा, अदबी[6] रसाईल राही, एशिया, मंजिल, दस्तक, नया मार्ग, बज्मे ख्याल की अदारत की और आजकल चट्टान निकाल रहा हूं- 1936 से सियासत[7] में हिस्सा लेना शुरु किया-हाई स्कूल से निकाला गया, 1938 में कम्युनिस्टों के असर[8] में आया, कम्युनिस्ट नवाज पंजाब फैडरेशन का सरगर्म रुकन[9] रहा मगर 1941 में 'जनता की जंग' के सवाल पर कम्युनिस्टों से अलगाव हो गया, 1941 से 1957 तक कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी फिर सोशलिस्ट पार्टी का सरगर्म रुकन[9] व ओहदेदार रहा। गिरफ्तारी व जेल जाने का सिलसिला 1940 से शुरु हुआ और आज दिन तक जारी है। तकसीमे-वतन[10] के वक्त पंजाब स्टॅडेंट्स कांग्रेस का सदर[11] और ऑल इंडिया स्टूडैन्ट्स कांग्रेस का ज्वाइंट सेक्रेटरी रहा। सरगर्म[12] और अमली सियासत के दौर में सुभाषचन्द्र बोस, पं. जवाहर लाल नेहरु, बैरिस्टर आसफ अली, सैय्यद अताउल्ला बुखारी, मुशी अहमदद्दीन, मृदुला बहन साराभाई, आचार्य नरेन्द्र देव, युसफ मेहर अली, मीनू मसानी,

1. सान्निध्य, 2. परामर्श, 3. और, 4. सदस्यता, 5. साहित्यिक सूझबूझ, 6. साहित्यिक, 7. राजनीति, 8. प्रभाव, 9. सदस्य, 10. देश का विभाजन, 11. प्रधान, 12. सक्रिय

जयप्रकाश नारायण और डा. लोहिया के हमराह एक माह से लेकर तीन साल तक बहुत करीब रहा। जिन्दगी का बेशतर[1] हिस्सा पंजाब और देहली में गुजारा। जिंदगी हमेशा हंगामों से भरपूर रही और है। ज.हर को कंद[2] कहना, चमचागिरी करना, दरबारी बनना और बंदे को खुदा कहना कभी न आया। गलत आदमी, गलत उसूल[3] और गलत बात तबियत को रास नही। "मौजे खूं सिर से गुजर ही क्यों जाए" मगर हक्गोई[4] व बेबाकी[5] मसलक[6] है। जिंदगी भर इस आदत की कीमत चुकाता रहा हूं। सैकड़ो नशेमन[7] बना कर फूंक दिये। न सताईश[8] की तमन्ना[9] न सिले[1] की परवाह। आईने से डरता हूं क्योकि मरदम[11] गजीदा हूँ मजहबी[12] दुनिया में भगवान कृष्ण, हजरत ईसा मसीह, अमाम हुसैन, गुरु गोबिन्द सिंह और रामकृष्ण परमहंस का परस्तार[13] हूं, तकरीबन 50 किताओं का मुस्सनिफ[14] हूँ, म्यूनिसिपल कमेटी थानेसर कुरुक्षेत्रा का मेम्बर, वाइस प्रेसीडेन्ट व प्रेसीडेन्ट रहा, एक गैर शाईराना, गैर अदबी, गैर सियासी, गैर समाजी, गैर मजहबी बौनों के निहायत पसमान्दा[15] शहर के दमघोटू माहौल में रहा रहा हूँ।

"जमी सख्त है आसमां दूर है"
माना कि जिंदगी को न गुलजार कर सके।
कुछ खार[16] कम तो हो गये गुजरे जिधर से हम ।।

बालकृष्ण मुजतर

1. अधिक, 2. मीठा, 3. सिद्धांत, 4. सच बोलना, 5. स्पष्ट बोलना, 6. सिद्धांत, 7. नीड, 8. प्रशंसा, 9. इच्छा, 10. पुरस्कार, 11. मनुष्य का काटा हुआ, 12. धार्मिक, 13. पुजारी, 14. लेखक, 15. पिछडे, 16. कांटे

हिमायुं

उर्दू का अदबी माहनामा

एडीटर — 23 लारेन्स रोड,
मियां बशीर अहमद, बी.ए. — लाहौर
आकसन.बार.एट.ला. — 11 फरवरी, 1943

मैंने जनाब बालकृष्ण मुजतर की नज्म[1] व नसर[2] का बगौर[3] मुतालया किया है। मेरी नाकदाना राय में मुजतर साहब के कलाम में बेहतरीन अदबी सलाहतें व जिद्दतें[4] हैं। उनका अन्दाजे ब्यान व तर्जे[5] तहरीर अनोखी व अछूती है।

जनाब मुजतर के कलम में जोर और असर है। नीज उन्हें जुबाने उर्दू पर मुकम्मिल अबूर[6] हासिल है। उनका कलाम खुद बेहतरीन होने का मुंह बोलता शाहकार है।

यूसफ जफर
एडीटर

कल पुकारेंगे मुझे लोग मसीहा कह कर ।
आज हर शख्य के हाथों में हैं पत्थर कितने ।।

1. पद्य, 2. गद्य, 3. ध्यान से अध्ययन, 4. नयापन, 5. शैली, 6. निपुणता

बाल कृष्ण मुज़तर : जाने महफिल

कुरुक्षेत्र दुनियां का अज़ीम[1] और मुक्क्द्दस[2] मुकाम है और कुरुक्षेत्र की अज़ीम[1] व मुक्क्द्दस[2] हस्ती पं. राजाराम भारद्वाज खल्फ[3] पं. शंकरलाल थे। पं. राजाराम एक आलिम[4], बेदारमग्ज़[5] रोशन ख्याल, मिलनसार, बेबाक[6] व बेखौफ और बात के धनी कर्मयोगी थे। कुरुक्षेत्र से मुतल्लका[7] उनकी मालूमात बेपनाह थीं। उनका मुकाम कुरुक्षेत्र में अंगूठी में नगीना के मिसल था। वह कुरुक्षेत्र की समाजी व धार्मिक ज़िन्दगी के महवर[8] थे। सदियों पुरानी संस्था पंचायत ब्रहमणान के सदर थे। वह उन गिने-चुने लोगों में से थे जिनका सरकार, अफसरान और अवाम[9] सब अहतराम[10] करते थे। वह सालहा साल तक म्युनिसिपल कमेटी थनेसर के मैम्बर और हिन्दुसभा के सदर[11] रहे। कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी के कयाम में उनका काबिले तारीफ़ नुमायां किरदार[12] है।

जनाब बालकृष्ण मुज़तर उस अज़ीम व नादिर हस्ती के इकलौते लाड़क बेटे हैं। जनाब मुज़तर में भी अपने वाल्द बजुर्गवार के तमाम ओसाफ[13] बदर्जा उ त्तम मौजूद हैं। नज्म व नसर, तहरीर व तक़रीर, अदारत[14] व सदारत[15], हाज़िर जवाबी, बदला संजी, तीखे और चुभते हुए मज़ाक, तनज़ व मज़ाह, गजब का हाफिज़ा, हज़ारों अशुआर, तारीखी, मजहबी व सियासी वाक़ यात हिफज़, आलिमों और

1. ऊंचा, 2. पवित्रा, 3. पिता, 4. विद्वान, 5. चेतन, 6. स्पष्टवादी, 7. सम्बन्धित, 8. धुरी, 9. जनता, 10. सम्मान, 11. प्रधान, 12. हिस्सा, 13. गुण, 14. सम्पादक, 15. प्रधान

बजुर्गों का अहतराम[1], साफगोई, अदब, सियासत और मुखतलिफ़ मज़ाहिब और तहज़ीबों के वसीह मुतालया[2] में मुज़तर साहिब को एक खास मुकाम हासिल है। बरतानवी साम्राज्य के कैद व बन्द ने उनकी तबियत को एक और जिला[3] बख्शी है। आचार्य नरेन्द्र देव, डा. राम मनाहर लोकिया और जयप्रकाश नारायण की कुरबत[4] ने उनको संवारा और निखारा है। जनाब मुज़तर के मिजाज़ में खुद्दारी के साथ कौम व वतन का दर्द है। लचकने की बजाए टूट जाना उनकी फितरत है।

जिन से रोशन हों सारे विराने ।
अब भी हैं इस तरह के दिवाने ।।

अलामा नारायणदास तालिब

1. सम्मान, 2. अध्ययन, 3. प्रकाश, 4. सान्निध्य

बाल कृष्ण मुज़तर : इलफाज़ का जादूगर

"फिर इसके बाद अन्धेरा रहेगा महफिल में,
बहुत चिराग़ जलाओगे रोशनी के लिये ।"

जनाबे मुज़तर जंगे[1] आज़ादी के मुजाहिद[2] और तुलबा[3] के बेख़ोफ़ और बेताज लीडर रहे हैं। वह जिन्दगी में ईमानदारी, नफ़ासत, अदब, रख्ररखाओ, शाईसतगी, ख़लूस और नग़मगी के परस्तार हैं। मुज़तर बहुत प्यारा दोस्त और ख़तरनाक दुश्मन है। वह जाने महफिल है, जहाँ बैठ जाता है फिर "वह कहे और सुना करे कोई।" उसके अदबी लतीफ़े-चुटक़ले, लोग एक जगह से दूसरी जगह बतौर तोफ़ा ले जाते हैं। वह बला का ज़हीन है। उसके मिजाज़ में आशुफतगी, तबियत में आज़ादी व वालिहानापन, तख़्युल[4] में रंगीनी और जज़बात में गर्मी और तकरीर में बरजिसतगी है। ग़रज़े कि वह इलफाज़ का जादूगर है। उसकी यह बात बरहक़ है कि-

यह अलग बात बहुत ज़ख्म भी आए लेकिन।
मैने हर दौर में सिर अपना उठा रखा है ।।

मोहनलाल मयकश
करनाल

1. स्वतंत्रता संग्राम, 2. नेता, 3. विद्यार्थी, 4. कल्पना

अपने और पराए दोनों हम से ख़फा से रहते हैं।
ज़हर को अमृत कहना 'मुज़तर' अपने बस की बात नहीं।।

-बाल कृष्ण मुज़तर

समर्पण

मेरी बेकल जिन्दगी की रह गुज़र पर दूर तक
दोनों जानिब थोड़े थोड़े फासले पर पेड़ हैं
प्यार के सद रंग फूलों से लदी हैं
जिनकी लाखों ड़ालियां
झूमती हैं जिनमें बूए महरो इख़्लासो वफ़ा
चूमती हैं जिनको अहसासे मुहब्बत की हवा
बैठकर जिनकी घनेरी, मेहरबां छांव तले
मैंने काटि हैं दो पहरें शीद्दते आलाम की
रोते रोते आके बैठा, हंसते हंसते श्याम की
लोग कहते हैं कि ये सब लोग हैं
और इनके नाम हैं
लोहिया, जयप्रकाश, नरेन्द्र देव, पटवर्धन
और मैं कहता हूं ये सब पेड़ हैं
प्यार के सदरंग फूलों से लदि हैं
जिनकी लाखों ड़ालियां
झूमती हैं जिनमें बूए महरो इख़्लासो वफ़ा
चूमती हैं जिनको अहसासे मुहब्बत की हवा
बैठकर जिनकी घनेरी, मेहरबां छांव तले
मेरी शख़्सीयत मेरी तख़्लीक ने पाई ज़िला।

पेश लफ्ज़

मैं शायर हूं।
मैने जो महसूस किया है।
जो देखा है वही कहा है।
चाहे वो दुःख हो या सुख हो
महबूबा की पहली शर्मीली मुस्कराहट हो
या उसके छिन जाने का अन्तिम क्षण
या उसकी प्रशंसा हो जैसे
काली आंखें, धनेरी पलकें, ज्गमग जगमग करते गाल
पतले होंठ, मुनासिब अबरु, मौज़ू माथा, लम्बे बाल
देखने वाले रुक रुक जाए, ऐसी मस्तानी बरसाती चाल

❒ मैं शायर हूं।
मैंने जो महसूस किया है, जो देखा है
वहीं कहा है
चाहे वो दुःख हो या सुख हो
या फितरत की कोई अदा हो
कोई सुहाना मन्जर, जैसे
फूटती कोंपल, खिलती कलियां, हंसते फूल
झूमते झोंके, उठती आंधी, उड़ती धूल
साकिन झीलें, बहते दरिया, चढता सागर
बढती मौज़, चलते चप्पु, ड़ोलती नैया
हैया हैया, जीवन अपना आप खैवैया
गाते मलहाओं की फौज

मच्छवारों के फैलके गिरते
गिरते सिमटते जालों के पीछे
भीगी भीगी, मैली मैली खानों वाली शालों के पीछे
पौ फटने का मधुर, मनोहर, मनमोहन रंगीन समा
धूप की लहरें, गर्म दोपहरें, ढलती शामें, घोर धुआं
हदे नज़र तक फैला फैला सुरमई गंभीर उफ़क़
नई नवीली शर्मीली दुल्हन से लाल गुलाल शफ़क़
बंगालन के बालों जैसी, गहरी काली नागन रात
मेरी महबूबा के मुख जैसा गोरा गोरा पूरा चांद
मेरे अश्कों जैसे तारे
मेरी आहो जैसी धुंध

❒ मैं शायर हूं।
मैंने जो महसूस किया है, जो देखा है
वहीं कहा है
चाहे वो दुःख हो या सुख हो
तन की चिन्ता, मन की विपता हो या रूह का अनमिट सोग
कुछ कहने की कुछ सुनने की आदत हो
या
सोच में गुम रहने का रोग
अन्दर के जीवन की लगन हो
या बाहर की काया का छाया संजोग
जीने की सदरंग तमन्ना हो
या मौत का काला ख़ौफ़

चोराहों पर मंड़लाते खूनी कानून हों

या आज़ादि के मतवाले दिलवालों का हजूम जिनका नारा- मंच के रहेगी

नगर नगर में गांव गांव में एक नये जीवन की धूम

जिनका नारा - बुझ न सकेंगे

जेल के ड़र से आज़ादि के दीप

जिनका नारा - ज़ीत की बुंद ज़रूर गिरेगी

मुंह खोले बैठी है आशाओं की सीप

- मैं शायंर हूं।

मैंने जो महसूस किया है, जो देखा है

वहीं कहा है

चाहे वो दुःख हो या सुख हो

अतीत, वर्तमान या भविष्य हो

मेरे कलम की नोक के नीचे

सारे ज़माने कांप रहे हैं

कहदो उनसे जो हर दौर में

आस्तीन के सांप रहे हैं

सोच के सुन्दर रथ पर चढ़कर

दूर दूर तक घूम आया हूं

सारे समन्दर तैर चुका हूं

सब दुनिया में झूम आया हूं

दिल के लबों से इनसानों के

प्यार का माथा चूम आया हूं

प्यार की लो से, इल्म की ज़ो से
मज़लूमों को देख आया हूं
ज़ालिमों को पहचान आया हूं
दुःख की आंधी, जीवन दीप की मौत नहीं है
मान आया हूं।
मेरे हाथों, मेरे पांवों में, यह ज़न्जीरे ड़ालने वालों
मेरे होंठों, मेरे नग़मों पर पाबन्दि ड़ालने वालों
मेरे गीतों की तनवीरें फूट चुकी हैं
गये दिनों के मुंह में पानी मत टपकाओ
गये दिनों की सब तकदीरें फूट चुकी हैं
अब कोई तदबीर तुम्हारी चल न सकेगी
जितना चाहो पानी दे लो
सूखी खेती फल न सकेगी
मैं शायर हूं।
जो भी मंहसूस करुंगा
जो देखूंगा वही कहूंगा।

❖ ❖ ❖

सोचते सोचते नींद सपना हुई
जागते जागते सारी शब कट गई
शब जिसे साकिनानें दयारे वफा
बे अमां भी कहें, मेरबां भी कहें
नीदं दस्तक में भरकर निगारे सबा
बन्द खिडकी के दर खटखटाती रही
चौदहवीं रात के चांद की चांदनी
झन के शीशो से कमरे में आती रही

- एक अनजान से दर्द का वहम सा
एक बेनाम सी बेकली की तरह
दिल के नजदीक महसूस होता रहा

- इक हसीना जिसे कल सरे रहगुज़र
मैंने देखा था यूं जैसे देखा न था
मेरी आंखों मे फिरती रही रातभर

- आरजू ने कहा, दिल का दर खोल दो
धडकनों ने कहा, हम तुम्हारी नहीं
जुस्तजु ने कहा मेरे पर खोल दो

- मैं कि हैरान था, चुपचाप लेटा रहा
बन्द खिडकी के दर खटखटाती रही
नीदं दस्तक में भरकर निगारे सबा

□ चौदहवीं रात के चांद की चांदनी
जिसको बिरहा के मारे सितमगर कहें
अपने सारे सितम मुझ पे ढाती रहीं
दिल मचलता रहा, ज़हन जलता रहा
जागते जागते सारी शब कट गई
सोचता हूं कि ये नागहां रतजगा
रोज़ का सिलसिला तो न बन जाएगा?

एक ही गम हो तो मैं कुछ न कहूं
मेरे ही घर में अंधेरा हो तो में चुप भी रहूं
जिस तरफ देखो अंधेरा ही अंधेरा है यहां
बुझ के कितने ही दिल, कितने ही दीप
छुप गया नूर में नहलाया हुआ माहे तमाम
सो गई, डूब गई काहेकशां, जागते तारे भी हैं सुस्त खराम
लुट गई अमन के नगमों की सदा, मिट गया राहतों
आराम का नाम थम गया हुस्ने दिल आवेज का रक्स
रुक गये इश्के जंनू खेज के गम
कोई आंचल, कोई रुखसार, कोई जुल्फ नहीं
हसरते रूखेंरगी की सर्जी है सरेबाम
मयकदा है न सुराही, न मयेनाब न जाम
ग़ गमे सुबह नरब और क्या खो के गुजारुंगा ये शब ?

कौन कहता है हवा बेरंग है
कौन कहता है कि रंगों की नहीं कोई सदा?
शाम की मदहम हवा ने जब
उसके रुख़सारों को चूमा
उसके आंचल को छुआ
और उसने मुस्करा कर अपना सिर
मेरे सीने से लगाया, मेरे शानों पर धरा
मैंने देखा उस घड़ी रंगे हवा
आरज़ू के इन्द्रधनुष की तरह गहरा लाल था
और अब मेरे बदन के लम्स से
उसका आंचल उसके शानों से गिरा
रंग पायल की तरह झनके हवा ने ताल दी
गुनगुना उठी शफक, झूमा उफक, नाची फिज़ा
दिल की हर धड़कन परवावज की तरह बजने लगी
रूह का हर राग रंगों की सदा से भर गया
कौन कहता है हवा बेरंग है
कौन कहता है कि रंगों की नहीं कोई सदा।

शाम डूबी तो बेकरारीये दिल
यूं बढी जैसे जानिबे साहिल
मौजे तुफाने तुन्दो तेज़ बढे
जाने क्यों डबडबाई आंखों से
तेरी तसवीर देख कर मैंने
कह दिया कितनी बेवफ़ा है तू
और फिर तेरी सारी तस्वीरें
हुस्न की लाजवाल तहरीरें
मैंने बेसाखता पलट डालीं
ईश्क पेचां की बेल खिड़की पर
बर्फीली हवा की तेज़ी से घबरा कर
रात भर अपना सिर पटकती रही
इक अजीब अजनबी तरीके से
आंख के अधखुले दरीचे से
नींद आ आ के लौट जाती रही
पौ फटी डूबने लगे तारे
मुस्कराए शफक के नज़ारे
ईश्क पेंचा के फूल खिल उठे

❖ ❖ ❖

काश मैं फर्क की दिवार को पिघला सक्ता
काश ये जबर की ज़न्जीरें गिरा कट सक्ती
काश वो लमह-ए-तनवीरो तरब आ सक्ता
जिसकी चाहत के लिये, जिसकी तमन्ना के लिये
सालहा साल सरे राह गुज़र
मैंने छुपकर तेरे साये की इबादत की है
दीदओ दिल तेरी राहों में निछावर करके
तेरे कदमों के निशानों से मुहब्बत की है

❑ सालहासाल की इस कशमकशे ईश्क के बाद
तूने जब मुझको पुकारा तो तेरे
महल के आहनी दर बन्द हुए
मैं तो इस दूर की आवाज़ पे भी जी लूंगा
और मरुस्थल के प्यासे मुसाफिर की तरह
ज़हर भी वक्त पिलाएगा तो मैं पी लूंगा
तेरा क्या होगा मगर
तू अगर छोड़ के आ भी गई सोने का नगर
तुझ से तो कट न सकेगा मेरे मरुस्थल का सफ़र
आ कि हम पहले से ही आगाज़े सफ़र से थक जाएँ
ईश्क बेहतर है कि बेहतर हैं ईश्क का सरमाया
कब ज़रूरी है कि सब काफिले मंजिल तक जाएँ

- तुम्हारी याद को बादल से कितनी निस्बत है
बता दिया है मुझे आज दीदए तर ने
फ़िज़ाए ज़हन में कुछ भी नहीं घटा के सिवा
अजीब हाल किया है घटा के मन्ज़र ने

- अभी थमी है सुबह से झिड़ी हुई बारिश
किसी ग़नीम की बिफरी हुई सिपाह की तरह
तमाम शहर पे गहरी, घनी, दबीज़ घटा
तनी है अब भी शबे स्याह की तरह

- गरज के साथ उतरती है अब भी चशमके बर्क़
दिले सकूत में शमशीरे बेपनाह की तरह
मैं उठके खानए ग़म से चला हूं मयखाने
तलब शराब की है हसरते गुनाह की तरह

- है इतना हबस कि हबसे दवाम लगता है
निगल लिया है हवा को घटा के नागों ने
वो इक सफीनए माज़ी कि तैरता था अभी
निगल लिया है उसे वक्त के समन्दर ने

- सड़क के दोनों तरफ़ पेड़ मुनजीमद महबूत
खड़े हैं जैसे हिलेंगे तो टूट जाएगें
परिन्द ओट में शाख्रों की इस तरह चुप हैं
जैसे रोज़े अबद तक न चहचहाएगें

है बरग बरग की आंखों में इस तरह आंसू
कि अब तो अब्र भी चाहे तो थम न पाएंगे
शराब पेश करूंगा, इन्हें भी साथ मेरे
अगर ये पेड़ दरे मयकदा तक आएंगे

□ जो सोचता हूं तो बस एक बात सूझती है
कि अब तो आज का सूरज भी छुप गया होगा
घटा छटी भी तो हर सिम्त तीरगी होगी
उफ़क के पास बज़ुज़ यास और क्या होगा।।

❖ ❖ ❖

अभी बुझा है क्षितिज पर शफक का आतिशदान
भडक भडक के हुए राख कित्ने रंग न पूछ
सवादे श्याम बना सुरमयी धुएं का पहाड
दियारे दिल में हुआ वक्त कितना तंग न पूछ
सकूं कि पहले ही इस शहर में बहुत कम था
उडा के ले गई साथ अपने दश्त की धूल
उम्मीद टूट गयी आरज़ू उजाड हुई
न कोई वृक्ष बचा है न कोई शाख न फूल
तेरे बगैर ही यूं तो कटि है उम्र तमाम
मगर ये श्याम ये बरन सुलगती जलती शाम
कटि है ऐसे कि जैसे रगे हयात कटे
यकी नहीं है कि अब इसके बाद रात कटे

- कितना मजबूर था मैं
  कितनी अन्धेरी, निर्दयी थी वो रात कि जब
  तेरा पैमाने वफ़ा ग़ैर से वाबस्ता हुआ
- दूर इक डूबते तारे ने कहा
  अब तेरा कोई नहीं
  मैंने घबरा के ग़मे दिल की तरफ़ देखा
  ग़मे दिल ने कहा
  हां तेरा कोई नहीं-कोई नहीं
  मैंने चिल्लाके ग़में जां को पुकारा लेकिन
  उसने चुपके से कहा
  हां तेरा कोई, नहीं, कोई नहीं
  तीरगी और बढ़ी बढ़ती ही रही
  जाम पर जाम चले-चलते ही रहे
  उम्र के साए सुराही में ढले-ढलते ही रहे
  वहशते जां में कमी आई
  ने मैं दिवाना हुआ
  खुदकशी-ज़हन के तारीक कुवें में
  कोई हसरत पहुंची
  और मैं तेरी मुहब्बत का
  लरज़ता हुआ दामन थामे
  मौत की तरफ़ बढा
  कितनी यादें थी कि इक साथ चली आई थी
  कितने मुर्दे थे जो कबरों से निकल आए थे

वो रात कितनी रहस्यमयी थी कि जब हमने
खुद अपने हाथ से शम्मे वफा बुझाई थी
वो सुबह ग़म कि हुआ जिसपे खत्म अहदे तरब
जलू में कितने अलम ज़ार लेके आई थी

तुझे भी याद होगी वो सुबह कोहर आलूद
वो हिद्दते शबे रफ्ता सेचूर आतिशदान
वो राख जिसको उड़ा कर हंसा था मैं
और तू
तड़प के बोली थी ये राख है
जो अब बेजान
कभी न जाने ये कितना सुन्दर वृक्ष होगा

न जानें कितनी रातें, कितनी सुबहें गुज़री
मगर वो एक सहर एक सुबह कोहर आलूद
खड़ी है अब भी शबीस्ताने उम्र के दर पर
चिरागे आखिर शब हो रहा है मेरा वजूद
तुझे भी याद होगी वो सुबह कोहर आलूद
वो नीम बाज़ दरीचा, वो अहमरी पर्दा
हटाके जिसको बहुत देर हमने ढूंढा था
रदाए कहर में पिन्हां गुनाह ना करदा
वो हिद्दते शबे रफ्ता से चूर आतिश दां
वो राख जिसको उड़ा कर हंसा था मैं

और तू
तड़प के बोली थी यह राख है जो अब बेजान
कभी न जाने ये कितना हंसी शजर होगी
हमारा अहदे तरब भी थी एक पेड़ कभी
तुझे नहीं तो तेरे प्यार को खबर होगी

जीवन के इक मोड पर, इक छतनार समान
वो मेरी राह रोक कर बोली ओ अंजान
और आगे मत जाईयो आगे है सुनसान
हरियाली और छांव का मैं अंतिम हूं निशान
मुझे से आगे रेत है, तपती जलती रेत
ना कोई फूल ना पंखडी ना कोई पेड ना खेत

❖ ❖ ❖

मैं बनवासी बावरा, मैं राही अनजान
उसके इस अंदाज पर खो बैठा ओसान
भूली सारी मंजीलें, भूले सारे ध्यान
घनी घनेरी छांव की चाहत का अरमान
जान के उसकी ओट में बैठ गया मजबूर
बीता जिवन रह गया जाने कितनी दूर

जाती ही नहीं शामे अलम जां के उफक से
डूबे हैं कुछ इस तरह से दिन अहदे तरब के
इस श्याम के दामन में शफ़क़ भी तो नहीं है
मिल जाएें जहां रंग तेरे आरिज़ो लब के

❑ बादल भी नहीं कोई कि बहलाऐं नज़र को
तारा भी नहीं कोई कि दिल उससे लगा लें
अहसास सुबक्सार है, विरान हैं आंखें
आंसू भी नहीं कोई कि पलकों पे सजालें

❑ हिलती ही नहीं अब दर्द के अशजार की शाखें
बिफरी हुई यादों की हवा थम सी गई है
उड़ती थी जहां गर्दे सदाए दिले वहशी
उस राह पे सन्नाटों की तह जम सी गई है

❑ तू आके ख्यालों में चली जाती है लेकिन
आहट तेरी धड़कन को सुनाई नहीं देती
खामोशीये जज़बात की धुन्द इतनी घनी है
ख्वाहिश की कोई शक्ल दिखाई नहीं देती

❑ वो दिन भी गये जब ये तमन्ना थी कि खुद को
जीभर के तेरे इश्क में बरबाद करेंगे
मुद्दत से वो रातें भी नहीं आई है जिनमें
सोचा था कि रो रो के तुझे याद करेंगे
बाकी है तेरा ग़म न तेरी याद है फिर भी
क्यों सूरते हालात बदलती नहीं दिल को

मैं फिर पी रहा हूं
और इस अज़मो अन्दाज़ से पी रहा हूं
कि जब तक जिऊंगा
बराबर पीता रहूंगा
बजा है कि मैंने
तेरे साथ वायदा किया था कि अब मैं
इसे जिन्दगी भर न चखूंगा लेकिन
तुझे याद होगा
कि तुने भी हरदम
मेरे साथ जीने
मेरे ज़ख्म सीने का वायदा किया था
और अब तू वो सब अहदो पैमां भुलाकर
यहां, सख्त मिट्टी के इस ढेर में
ऐसे सो रहा है, जैसे मुझसे कभी आशनाई न थी
और मैं जो यहां
फातहा कहने आया था, कांपते हाथों को मलते हुए
सिर्फ ये कह रहा हूं
कि जब तक जीऊंगा
बराबर पीऊंगा
कि इस जिन्दगी में
कोई कभी वायदे पूरे करने में समर्थ नहीं है
कि ये ज़िंदगी है
ग़मों का इक ऐसा समन्दर कि जिसका किनारा नही है

घाटि से उतर के मुड़ गया है
जंगल की तरफ लम्बा रास्ता
बरगद का ये बूढ़ा पेड़ इस पर
सदियों से इसी तरह खड़ा है
उलझा हुआ अपनी ही लटों में
तिनहाई का ओढकर लिबादा

- सदियों से इसी तरह खडी है
मन्दिर की यह खण्ड़हर इमारत
सदियों से इस पर लिखी है
पत्थर पर ये इबारत
वो हाथ लिखा जिन्होंने इसको
कबके खुद हो चुके हैं ग़ारत

- जीने की उमंग हो कि हसरत
है कितनी हसीन कितनी सादा
हर डूबते और सम्भलते दिल पर
सदियों से है इसी तरह इसतआदा
घाटि से उतर कर मुड़ गया है
जंगल की तरफ लम्बा रास्ता

- तुम मौत की वादियों में गुम हो
मैं अर्सए दश्ते ज़ीस्त में गुम
ये हिज्र, ये फासले, ये दूरी

अब खतम न कर सकेंगे हम तुम
इस पर भी वो शम्माए जज़बो मस्ती
जो दिल में मेरे जला गई तुम

❑ बरसों से इसी तरह खड़ी हैं
ढलती हुई उम्र की इमारत
बरसों से इसी तरह लिखा हुआ है
दिल पर तेरे इश्क़ की इबारत
वो हाथ लिखा जिन्होंने इसको
कबके खुद हो चुके हैं ग़ारत।

फिर पतझड की रुत आई है
फिर हंसते हुए फूलों की आंखे भरने लगी हैं
इक इक करके सारी कलियां, सब पखुडियां बिखरने लगी है
नीम बरहना शाखो की छाती से लिपट कर
सर्द हवाएं सायं साय करने लगी है
अन देखी , अनजानी तिन्हाई की घडिया
ध्यान की उतराई से दिल में उतरने लगी है

किधर जा रही है, कहां जा रही है?
हयात अन्धे माज़ी की उंगली पकड़ कर
किधर ले चली है, कहां ले चली है
ग़मे दिल की ज़न्जीर मुझको जकड़कर
किसी अन्जुमन में भी जाना अबस है
कोई सी भी महफिल सजाना अबस है

❑ ये ढ़लती हुई शब
ये ख्वाबों में खोया हुआ, आखरी पहर
किसका हुआ है
ये बेरहम गलियां, ये बेमहर सड़कें
ये सोया हुआ शहर किसका हुआ है
सदा देके इसको जगाना अबस हैं
किसी घर की दर पे जाना अबस है

❑ कहीं कुछ मिले, कोई दिवार टूटे
कोई रोशनी ग़म के उस पार फूटे
तो शायद ये दिल कैदे ज़ुलमत से छूटे
वगरना ये सेरे शबाना अबस हैं
ब हर गाम यूं डगमगाना ग़लत है।

- जुलमते दश्ते ज़ारे ज़ीस्त में ईश्क
इक सितारा था वो भी डूब गया
बहरे आलामे रोज़ो शब में जनूं
इक किनारा था वो भी डूब गया
मौजए दर्द में, सफिनए याद
इक सहारा था वो भी डूब गया
हसरते बेकिनार क्या होगा
थम गया वक्त, जम गये लम्हे
ए! दिले बेक़रार क्या होगा
- रहरवे ज़हन दम बखुद के लिये
बन गई अब तो तेरी धड़कन भी
काफ़िला हाए दूर की आवाज़
चश्मे ग़म खुश्क है न पुरनम है
ज़िन्दगी में न सोज़ है न गुदाज़
जादए जज्बये कल्पना में
एकदम रह गया है अब दम साज़
मंज़िले हाले ज़ार क्या होगा?
आरज़ु है न जुस्तजु कोई
ए! दिले बेकरार क्या होगा
- रात के दामने गुरेज़ा पर
ये सितारे ये मुंन्जमद आंसूं

क़ितनी बदसूरती से कांपते हैं
चांद के ज़र्द रु झरोके से
क़ितने मकरूदा दाग़ जागते हैं
लहरिये चांदनी के धरती पर
मृत्यु का साया बनके हांपते हैं
वहशते जा निगार क्या होगा?
सर्दो बेहिस है जांगुदाज़ीये हुस्न
ए! दिले बेकरार क्या होगा?

☐ ये घने पेड़ जिनके पहलू में
थक के सोने लगी है बादे ख्याल
मुझसे कहते हैं तुम भी सो जाओ
जिस्म की शामे पुर अलम बनकर
रूह के शब में जज्ब हो जाओ
अपने ही बेकरां अन्धेरे में
अपनी परछाई बनके खो जाओ
ज़हने बेइख्तीयार क्या होगा
मैं अगर खो गया अन्धेरे में
ए! दिले बेकरार क्या होगा?

हुक्म हुआ
गर्दन झुका कर
कुछ ज़र्द पत्ते
शाखों से टूटे, जीवन से रूठे
कुछ जिनमें दम था
थोड़ा सा नम था
हुक्म हुआ है, आंखे चुराके
शाखों की लरज़ां बाहों में सिमट कर
कुछ देर सिसके, कुछ देर कांपे
कुछ देर तड़पे, कुछ देर हांपे
इतने में जाकर
चक्कर लगाकर, फिर लौट आया
पतझड़ पवन का बेरहम झोंका
नीचे ज़मीं पर
ज़ख्मी ज़बी पर
त्यौरी चढाए, नथुने फुलाए
धोबी का कुत्ता सोया हुआ था
अचानक सुनकर
पत्तों की सरसर
पहले तो चौंका

फिर सरसराते, उड़ उड़ के आते
पत्तों पे चिड़कर जी भर के भौंका
वहशत पे उसकी, मैं मुस्कराया
इतने में जाकर फिर लौट आया
पतझड़ पवन का बेरहम झोंका

तुम्हारे ये अश्क
जो मुझे देखकर, तुम्हारी लरजती पलको पे रुक गये हैं
मैं चुन चुका हूं
वो सारे दुखडे, वो सारे किस्से, वो सारे अफसाने
जो तुम्हारे थिरक्ते होटों पे रुक गये थे
मैं सुन चुका हूं।

मुझे खबर है तुम्हारी बरबादियों की, मजबूरियों की लेकिन
तुम्ही कहो अब शिकस्ते दिल के सिवा रहा क्या है अपने बस में
सब अब ये कुछ ढूढती हें ये कुछ चाहती निगाहे
जो लडखडा कर तुम्हारी आंखों से मेरी आखों में आ गई हैं
उन्हें बुला लो, उन्हें झुकालो, उन्हें बता दो
कि अब मेरे दिल में जांगजी है
वो बूढी तहजीब, जिसके जबडो में खून है
तुम सी अनगिनत दुल्हनों का दिल का।

दूर तक अंधेरा है
जज्बे दिल की राहों में
ढल गई स्याही में - रंगों नूर की शम्मे
कितनी देर तक जलतीं - सेले वक्त की ज़द में
साये तक नहीं बाकी - आज उन ज़मानों के
कुछ निशां नहीं मिलते, आज उन फसानों के
शहर शहर कल जिनका तज़करा था, शोहरा था
मोड़ मोड़ पर रक्सां - जम घटे थे यारों के
रज़म गाहे हस्ती के - हर मुहाज़ पर हम थे
इक अजीब नशा सा - रूहों दिल पे तारी था
ज़हन से रगे जां तक - सेले नूर जारी था
और अब यह आलम है
मोड़ मोड़ पर पिन्हां - अपनी ज़ात का ग़म है
बेबसी के अश्क़ों से - आस्तीनें जां नम हैं
❑ उन गये ज़मानों का - जब ख्याल आता है
ज़हन अपनी हालत पर - आप कांप जाता है
यूं सुनाई देती हैं - उन दिनों की आवाजें
जैसे अर्ध निंद्रा में - कुरबों दूर की बातें
मिलके एक मुबहम सी - रागनी सुनाती हैं
❑ रोशनी के मिनारें - भूत जान पड़ते हैं

ख़ौफ़नाक अंधरे - सुबहो शाम बढते हैं
जज्बे दिल की राहों में

❒ इतना गिर गया हूं मैं - अपनी ही निगाहों में
कार हाऐ रफ्ता के - ज़ीक्र से भी डरता हूं
सोच से भी डरता हूं
फिक्र से भी डरता हूं

❖ ❖ ❖

उसके जाते ही लुटि हर रहगुजर
उसके जाते ही बुझे सारे चिराग
उसके जाते ही , दिल मुजतर ने आंखों से कहा
बुलबुले में एक लम्हे से जयादह कब रुकी
वक्त की नाजो पाली बेटी हवा
सतहहे दरया पर न ढूढों अब उसे
अब न जाने वक्त भेजे कब उसे ।

❖ ❖ ❖

पुर सकूतो पुर खतर
बेदिली से साहिले खुनक की सर्द रेत पर
बन्द आंखें नीमजां बाजुओं से ढांप कर
लाश की तरह पड़ा हूं बे खबर

❑ जब किसी ख्याल की
कोई मौजे तुन्दो तेज़
मेरे नीम सर्द जहन, नीम गर्म जीस्म को
छूके लौट जाती है
जीन्दगी की झाग की सौंधी-सौंधी बास से
अपनी याद आती है

❑ चौंक्ना तो हूं मगर
बन्द आंखें खोलकर
आसपास देखने की शक्ति अब कहां से लाऊं
दब गये हैं बेदिली की ढड़ी रेत में जो
वो सपने अब कहां से लाऊं

❑ काश कोई लहर
कोई मौजेसितम मुझे
फिर उठाके फैंक दे
कर्बो दर्दो ग़म के उस बहरे बेपनाह में
थोड़ी देर पहले जिसमें डूबने लगा था मैं
कशमकश की लहर जिससे मुझको खींच लाई थी
बेदिल के ठंडी रेत के साहिल पर

ए हयाते दिन आवेज़
आज देखिये, पहले रात ढले कि नींद आए
जाने कबसे जारी है - ज़हनो दिल की सरगोशी
जाने कितनी घड़ियों से - वक्त मेरे कमरे में
लौट कर नहीं आया
अपना ग़म तो बरसों से - तेरे शोर से गुम है
तेरे ग़म का सन्नाटा
टूटने नहीं पाता
जाने किस कल्पना में - जम गई हैं दिवारें
इक कदम नहीं हटती - इक कदम नहीं बढ़तीं
और इन पे आवेज़ा
दोस्तों की तस्वीरें - अपने आप में गुम हैं
बात तक नहीं करतीं
आंह तक नहीं भरतीं
कितनी बेसरोपा है - ये शबे ज़मीस्तां भी
ऊंघती हुई छत पर - बिजली है न बादल है
चांद है न तारे हैं
बेसकूं निगाहों की - भूख और बढ़ती है
ज़ेरे बाम आवेज़ा - एक बल्ब में आखिर
कितनी देर तक झांकें
डूबती हुई आंखें

कोई सर्द झोंका भी - आके रोज़ने दर से
हाले दिल नहीं सुनता
सो गये हैं शोले भी - राख के कलेजे में
आहनी अंगीठी में - आंच तक नहीं बाकी
बेकरारीये दिल को - सर्द महरिये ग़म को
किस चलन से बहलाऐ
किस जतन से गर्माए,
सिर्फ एक महफिल है - मेज पर किताबों की
जिसमें जान बाकी है
सर वर्क हिलाते हैं - रंग-रंग के आंचल
ज़हन की जिज्ञासा को - प्यार से बुलाते हैं
रास्ता दिखाते हैं - इनसे भी कोई लेकिन
कितनी देर तक बहले
कैसे हाले दिल कह लें
खोल भी दिया जाए - गर ये बन्द दरवाज़ा
ए हयात दिल आवेज़ - तब भी तेरा क्या होगा
शब की दस्तरस में है - मौजे मय न पैमाना
बदमिजाज़ सड़कों पर - सर्द-सर्द गलियों में
दूर-दूर तक कोई - गीत है न अफसाना
ए हयाते दिल आवेज
आज देखिये पहले, रात ढले या नींद आए

❖ ❖ ❖

ए जाने जहान सुबह गेती
मुझसे तो ये शब न कट सकेगी
यह शब ये उदासियों भरी शब
ये शब ये वफ़ा की आखरी शब
पहले भी तो तेरा ग़म था लेकिन
इतना तो न था कि जान निकले
पहले भी बुझे-बुझे नहीं थे
ये चांद, ये कहकशा, ये तारे
ये लोग ये बेबसी के मारे
पहले भी तो इन्तज़ार तेरा
देखा है हज़ार बार करके
काटी हैं कई उजाड़ रातें
तारों के दिये शुमार करके
पहले भी तो बेक़रार दिल में
था तेरे फिराक़ ही. का डेरा
पहले भी तो हर किरन थी ज़ख्मी
पहले भी तो था घना अन्धेरा
ए जाने जहानो सुबह गेती
लेकिन ये कहा था हाल मेरा
जज्बों की उदास रह गुज़र पर
फैली हुई आरज़ू की चादर
मानिंदे कफ़न कहां लगी थी
मुझसे तो ये शब न कह सकेगी

अब तो संभल जा ए कल्बे मुज़तर
काटी हैं गरचे आंखों में फिर भी
गुज़री तो है एक शब तेरे ग़म की
माना कि ये सुबह तारीकपा है
माना कि कल शब फिर जागना है
कल का अभी से ग़म क्यों करुं मैं
अब की मुस्सरत कम क्यों करु मैं
कल फिर जीएगे, कल फिर मरेंगे
कल शब की बातें कल शब करेंगे

तुझ से पैमाने वफा बांध तो लू डरता हूं
मेरे वो दिन, वो महो साल जो वाबस्ता रहे
तुझ सी इन नाजनी रानाई से
इतने मानूस हैं मुझ से मेरी तनहाई से
मैं उन्हें भूल भी जाऊंगा तो वो
छोड कर साथ न जाएंगे मेरा
हर घडी हाथ छुडाऐंगे तेरा
यह भी मुमकिन है कि आते ही तेरे
रुठ कर मुझ से चले जाएंगे वो दिन वो माहो साल
लोट कर फिर न कभी आऐं वो दिन वो माहो साल
फिर जी ए जाने तरब डरता हूं।

जंगली फूलो के नाम

ख़ुशनुमा लड़कियों
ख़ुशअदा लड़कियों
तुम जो हंसती हुई
खिलखिलाती हुई
तितलियों की तरह
रक़्स करती हुई
कहकशां की तरह
जगमगाती हुई
राह चलती हो
तो
ऐसा लगता है
जैसे
ज़मीं पर गगन से
धनक सी
उतर आई हो
अपने बेबाक से
क़हक़हों के तर्रनुम में गुम
जिस घड़ी
तुम सिरों को झटक कर
घटाओं सी ज़ुल्फ़ों को
अपने चेहरों के जादूघरों से
हटाती हो तो

ऐसा लगता है जैसे
अचानक फ़िज़ा में
बहार आ गई हो
चमन दर चमन
गुलिस्तां दर गुलिस्तां
हज़ारों कलियां खिल उठी हों
और
दुःखों का वह मरुस्थल
जो चारों तरफ़
घने कोहरे की तरह
फैलता जा रहा था
वेदनाओं का वह अथाह समन्दर
सिमट सा गया है
मगर
ए! नोखेज़ कलियों
मुझे यह पता है
अभी तुम जो इस राहगुज़र से
मेरी सिमत देखे बिना
अपनी उम्रों की शबनम से
भीगी हुई
ख़ुशबुओं की तरह से
गुज़र जाओगी
तो यह जादू भी
नाबूद हो जाएगा

मगर लड़कियों
बेख़बर लड़कियों
मैं तुम्हारे लिये
अपने दिल की तहों से
दुआ मांगता हूं
तुम यूं ही ख़ुश रहो
मुस्कराती रहो
बुलबुलों की तरह
चहचहाती रहो
सरखुशी-शान्ति
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्
के ये अनमोल पल
जो तुम्हारे वसीले से
तुम्हारे द्वारा निमित्त से तुम्हारे
मेरे दिलो, ज़हनों, नज़र पर
नाज़िल हुए हैं
तुम्हारे शबो रोज़ पर
इस तरह फैल जाएँ
कि तुम इसकी ख़ुशबू से
महकती रहो
और
एक नई सुबह की प्रतिक्षा में
दिन डूब जाए।

वफ़ा की ज़न्जीर कब मेरे पांव में नहीं थी?
तुम्हारे विरह में जब मेरा घर जला तो मैंने
न घर से बाहर कदम निकाला
न घर के अन्दर कोई आवाज की
सवाए इसके -
कि जब किसी राही जज्बे ने बढके शोलो पर मिट्टी डाली
कि जब किसी हांपती तमन्ना ने बढ के पानी का डोल फैंका
तो मैंने शोलों से प्रार्थना की
कि बुझ न जाना
परन्तु अब आग दिल की दहलीज़ तक पहुंची थी
प्राणों की कड़ीयां बची हुई थीं
कि बात फैली
गुज़रगहे वक्त से मददगार आन पहुंचे
अजब समां था
गली में अरमान जमा थे
आरज़ुऐं पड़ोसियों की छतों पर खड़ी हुई शोर कर रही थीं
हर एक के होंठों पर यही आवाज थी
निकल भी आओ - खड़े हुए किसकी प्रतीक्षा में हो
प्राणों के भीतर से
तुम्हारी आवाज़ भी तो आई थी - लेकिन उस वक्त
मेरी आवाज़ रिंध चुकी थी

मैं तुमसे ये भी न कह सका था
कि मेरे पांव वफ़ा की जंजीर में बंधे हैं
मैं घर से बाहर न आ सकूंगा

❒ वफ़ा की ज़ंजीर कब मेरे पांव में नहीं थी
सितम की आंधी से सर ज़मीने वतन की राहें आई तो मैंने
कलम को तलवार की तरह बरता
सितम शुआरों की राह काटी
खुली बगावत के गीत गाए
घोड़ों के पावों से कुचली हुई, दुःखों से निढाल जनता को उठाया
जो भय से मृत्यु सपनों में थे, उन्हें जगाया
जो जागते थे उन्हें बताया
कि भय केवल एक वहम है
जेल की दिवारें और फांसी का फन्दा एक शिगाफ की प्रतिक्षा में
है उठो
अन्याय का साम्राज्य केवल एक प्रहार तक है
कदम बढाओ।

❒ वफ़ा की जन्जीर कब मेरे पांव में नहीं थी?
जुल्मों से परिचित दिल पर जब धड़कन की चोट पड़ी तो मैंने
उसे भी हंस कर सहा कि मुझसे
कभी भी जीवन का अपमान न हुआ है और न होगा
मैं अधरंग शरीर के साथ पूरा रहा महिनों
मैं मृत्यु शैया पर था - परन्तु
मेरी निगाहों में जीवन अपनी सारी रंगीनिया लिये था

कभी किसी नौ जवान, स्वस्थ शरीर को देखकर मेरा दिल नहीं दुखा था
उषा, सितारे, चिराग, चांद भौर, सूरज, फूल, कलियां
उन दिनों भी इतने ही सुन्दर थे
जितने पहले थे
जितने अब हैं।
वफ़ा की ज़ंजीर कब मेरे पांव में नहीं थी?
मुझे यह तसलीम है
कि मैं कुछ दिनों से समय और जीवन की
कशमकश में इतना उलझ गया हूं
कि नश्वर व अनश्वर शासन मुझे एक सा लग रहा है
न अतीत और न भविष्य
किसी से भी मेरा कोई रिश्ता नहीं रहा है
अजीब ख़ामोशी, अजीब एकान्त है- जैसे
अभी अभी मेरी आत्मा चिल्ला के मर गई हो
कोई नहीं है
न कोई इच्छा न कोई हसरत
केवल मेरा गम है जो शतरंज की तरह बिछी हुई है
इधर भी मैं हूं, उधर भी मैं हूं
पैदल, घोड़ा और ऊंट भी मैं हूं, राजा और मंत्री भी मैं
हाथी भी मैं ही हूं
किसे बढाऊं, किसे हटा लूं?

किस उठा लूं?
ये तय नहीं हो रहा है मुझसे
मैं जीत जाऊं कि मात खा लूं?
हर एक क्षण पर बेबसी की मोहर है,
हर तरफ नश्वर अंधेरा है
न कोई हंगामा है, न आन्दोलन, एक सपनों का काफ़िला है
मगर ये इलज़ाम है कि मैंने
ज़ालिमों के घुड़सवारों को मार्ग दे दिया है
या
दुःखों से निढाल जनता से मेरा कोई वास्ता नहीं
जिसके साथ में कदम मिला के चला हूं
संघर्ष में रंगीनियां नहीं
मेरी निगाह में सुन्दर नहीं रहे हैं
उषा, सितारे, चिराग, चांद भौरा, सूरज और फल कलियां
तुम्हारे विरह की असीम आग बुझ गई है।

जानेमन

जानेमन

हुक्म है - इसलिये कर रहा हूं ब्यां

तूने पूछा है - मैं

कैसे जिता हूं अब

कैसे बढता है दिन

कैसे घटती है रात

क्या कहूं जानेमन - क्या लिखूं जानेमन

हाल, बेहाल है

और भविष्य - मृत्यु दिवस की तरह आज भी

अनचली चाल है

अधखुला जाल है

सिर्फ अतीत का था

इक दरीचा खुला

जिसमें चेहरा तेरा

गाहे हंसता हुआ

गाहे उतरा हुआ - देख लेता हूं

दुःख के झरोके से अब

जब कभी भी उधर

मैंने की है नज़र - सूझता कुछ नहीं

न दरीचा न तू

धुंध ही धुंध है - उम्र के चारों ओर
अपनी गहराई से
अपनी परछाई से
बच निकलने की भी - राह कोई नहीं
ज़िन्दगी के लिये
विषैले पत्थरों के
कूटते कूटते
ज़हर के शहर के
रास्तों पर मेरे
लफ़्ज़ घायल हुए
घाव छलनी हुए
सपने बूढे हो गए
शेर कहना भी अब
चार दिन और है
और रहना भी अब
चार दिन और है
अलविदा - जानेमन
अलविदा - जानेमन

❖ ❖ ❖

मेरे अजीज़ों - मेरे प्यारो
मुझे न टोको - मुझे न रोको
मैं वो मुसाफिर हूं - जिसकी मंजिल
सफर है, संघर्ष है, बेकारी, कशमकश है
मुझे खबर है कि आज मैं वो नहीं जो कल था
मुझे पता है कि मुझमें जुल्मो ज़ोर सहने की
अब वो पहली सी ताबो ताक़त नहीं रही
मेरा लहू ठंडा हो रहा है
मेरा बदन नर्म पड़ गया है
मेरी कमर झुकने की ओर अग्रसर है
और मेरी खाल, झुर्रियों को अपनाने लगी है
फिर भी
यह रह गुज़र - जिसपे कर्बला के मुसाफिरों के नक्शे पा हैं
यह रह गुज़र - जिस पर बैठकर ज़हर का प्याला लबों से सुकरात ने लगाया
यह रह गुज़र - जिस पर अपने लहू में रंगी कमीज़ लिये मेहनतकशों ने मनवाई अपनी मांगें
मुझे इसी रह गुज़र पर चलना है जिन्दगी भर
यह जिन्दगी चार दिन हो - तो भी
यह जिन्दगी सौ बरस हो - तो भी

ये ठान कर भी
कि मुड़ कर
न उसको देखूंगा
मैं इन्तज़ार में रहता हूं उसकी आहट के
दिलो नज़र पे
नहीं चलता इख़्तयार मेरा
मैं मुड़के देखता हूं
जब भी वो गुज़रती है
यह मान कर भी—
कि उतरी हुई नदी की तरह
मेरे अस्तित्व की एक [illegible] लहर है अथाह
बुझे अंगारे की तरह
राख को अपने दामन में लपेटे
मैं बेज़ार हूं
वो संगम पर आते डरती है
ये जान कर भी—
कि सिर्फ एक सांस
रात में है।
भोर के दीवे की भांति मेरा जीवन
मेरा सर्वस्व - मेरी जान
उसके हाथ में है
बहुत निकट है वह घड़ी
भड़क के बुझने की।

यह आलम कौन सा आलम है
यह हर सू धुंध कैसी है
यह मौसिम कौन सा मौसिम है
जिस पौदे की ओर जाऊं - हांप उठता है
जिस पत्ते को छूना चाहूं - कांप उठता है
जिस कली को सहलाना चाहूं - कमलाती है
जिस फूल को हाथ लगता हूं - मुरझाता है
यह हालत–
कैसी हालत है?
यह महरूमी किस तर्ज़ की है
यह हसरत कैसी हसरत है
जिस छांव में जाकर बैठता हूं - छट जाती है
जिस वृक्ष से टेक लगाता हूं - गिर जाता है
जो शक्ल इकट्ठी करता हूं - बट् जाती है
जिस चेहरे का रुख़ करता हूं - फिर जाता है
यह बातें
कैसी बातें हैं
यह सांझ सकारे कैसे हैं
यह रातें कैसी राते हैं।
जो शम्मा लाकर रखता हूं - बुझ जाती है
जो दिये बुझा कर रखता हूं - जल पड़ते हैं
जब शीतल पवन के झोंकों को चाहूं - हबस आता है

जब चाहूं झोंके रुके रहें - चल पड़ते हैं
जब चाहूं दर्द बढे हद से - थम जाता है
जब चाहूं ज़रा शान्ति मिले - दर्द उठता है
जब आंख खुली रखना चाहूं - नींद आती है
जब रात भर नींद नहीं आती - दिल कूड़ता है
यह रास्ता है?
या मंज़िल है?
यह पानी है या मृग-मरिचिका
यह तूफान है या किनारा है
जिस नक़्श पर आंख जमाता हूं - उड़ जाता है
जो रस्ता सीधा करता हूं - मुड़ जाता है
जिस धब्बे से बचना चाहूं
वो लगने पे तुल जाता है
जिस दाग को चाहूं लगा रहे - धुल जाता है
जो घाव भरने बैठूं - खुजलाता है
जो घाव खोलता हूं - सिल जाता है
यह वक्त
किस प्रकार का है
यह वहशत कैसी वहशत है
यह भय किस तरह का है
जब अपना आप भुलाता हूं - याद आता हूं
जब धड़कन बर्फ़ में रखता हूं - आंच आती है
इस छोड़ने और चाहने की वास्तविकता क्या है?
यह जुल्म की कौनसी मंज़िल है
यह विरह में छुपा हुआ मिलन है क्या?

- मेरे वतन!
  मेरे प्यार वतन - मैं लज्जित हूं
  ये लोग जो तेरी राहों में धूल उड़ाते हैं
  ये लोग जो तेरे झरनों में ज़हर घोलते हैं
  ये लोग जो तेरी सम्पत्ति को जलाते हैं
- तेरी तरह से मेरा और उनका धर्म भी है एक
  अलग गुरु भी नहीं, अलग सिरजन हार भी नहीं
  ये मेरे भाई हैं, मेरी धरती के बेटे हैं
  मैं इनके साथ नहीं हूं परन्तु अलग भी नहीं
  कि इनके दुःख सुख में शरीक हूं मैं भी
  कि इनके सांझ सकारे मेरे मित्र भी हैं
  मैं इनसे कटके बिछुड़ के भी - इनका खादिम हूं
  ये और बात है कि इनकी गुमराही के सबब
  फक़त तुम्ही से नहीं, कुल जहां से नादिम हूं
- मेरे वतन
  मेरे बहुत ही प्यारे वतन
  ये बेसबरे, दीन, ये अनपढ लोग
  ये अपने हाथ पांव आप काटने वाले
  ये अपने घावों का लहू आप चाटने वाले
  बहुत दुःखी हैं, बहुत अशान्त हैं - दिल इनके
  अन्याय से चूर, दुःखों से पारा पारा हैं

शताब्दियों से ये बेचैन बेसहारा हैं

❑ बलाऐं इनके घरों से कभी टलती ही न थीं
ख़ुशियों ने कभी इनके घर नहीं देखे थे
दुःखों के बोझ तले कन्धे झुके हैं इनके
कभी किसी ने उठे सिर न इनके देखे थे
शताब्दियों तक इन्हें चक्कीयों में पीसा गया
वे कुछ वर्षों से कुछ कुछ थमी तो है लेकिन
ये बेसबरे, ये दीन, ये अनपढ लोग
ये अर्ध जीवित लोग
विश्वास से इतने परे हैं कि सूरज भी
दूत इन्हें रात का दिखाई देता है

❖ ❖ ❖

खोखले वृक्षों के जंगल में हवा
सायं-सायं करते-करते खो गई
बेजान शहरों की गलियों में सदा
खट-खटा कर हर दरीचा सो गई
एक कोपल भी न फूटी-फूटती तो किस तरह
एक धडकन भी न जागी-जागती तो किस तरह
घोखले पेडों के टहने, बेजान शहरों के घर मुन्तज़िर हैं
उसे सदाए बेतलब के
जो उन्हें खून भी दे, आग भी दे, आब भी
आने वाली मुस्कराती जिन्दगी के ख्वाब भी

❖ ❖ ❖

मैं एक नदी हूं
मेरे तट पर खड़े
जितने भी वृक्ष थे सारे
एक एक करके
मुझमें गिर कर बह निकले हैं
मेरे तट की मिट्टी अब यतीम है

❑ पिछले कुछ बरसों से मैं
दोनों तटों पर प्रतिक्षण
अपने अन्दर कटकर गिरता रहता हूं
मेरे दुःखों ने मुझे
अपनी वेदना छुपाने का हुनर बख़्शा है
तट कटने की आवाज़ को, भरपूर हंसी की सूरत देकर
मेरे लबों पर ले आती है
मैं जितना भी कटता हूं, उतना हंसता रहता हूं

❑ इतना फैल गया है मेरा पाट
कि मेरे दोनों ओर
अब मरुस्थल है
तपते जलते क्षणों का एक बेश्कल मरुस्थल
और अब मुझमें गिरनेवाली मेरी मिट्टी
मेरी अपनी मिट्टी कम है और
मरुस्थल की रेत अधिक

तेज़ हवा के जंगली रेले
रेत उड़ाकर
योजना बंध, सिलसिले से मुझे भरते रहते हैं
मुझ से बाहर
मेरे शत्रु
वक्त का ड़ेम मुझ पर बनाकर
मुझे टुकड़े टुकड़े कर देंगे।

❑ गिर चुका है, मर चुका सारा शहर
थरथराती शाहराहों
कांपती गलियों में मल्बे के तले
रुक गई है रेंगते जिस्मों की लहर
थम गई हैं, नालाओं फरयाद, शिवन की सदारें
कुलबुलाते, चीखते, ख्वाईफ परिन्दे भी हैं चुप
गिरते हुए दिवारों दर से उठने वाली गर्द भी
खा गईं बेदाद की जालिम हवाऐं
जाने कब आएगें मलबे तहों में दफन लोगों का
बचाने वाले लोग
जाने कब आएगें फिर इस शहर, इस शहरे
गरीबां को बसाने वाले लोग?

एक अरसे से—
जज़बातो अहसास की वादि, ईश्क की बस्ती
नए पुराने सभी मकान तमन्नाओं के
खुली छतें अहदो पैमां की
बन्द झरोके आरज़ुओं के
नीम शिकस्ता दिवारों दर अरमानों के
उम्मीदों के ऊंचे ऊंचे, लम्बे चौड़े
गलियारे व पत्थरीले रस्ते
राहत के अशजार, सकूं की दूब, तरब की खुदरो बेलें
रंग बिरंगी सोच के फूलों की शतरंजी महरूमीं की ऊंची चोटि
तनहाई की जान लेवा ढलान, दुःखों की सख़्त चट्टानें
दर्द की खाई
सब पर यास की बर्फ़ जमी थी
❒ चारों जानिब
ठंड़ी और बेजान सफेदि फैल रही थी
जीवन क्या था एक कफ़न था
जिसके अन्दर
खुद को अपने यखबस्ता सीने से लगाए
मैं इक जीन्दा लाश की सूरत पड़ा हुआ था
दिल के विराने में कुछ बे चेहरा लम्हे

आसेबी सायों की सूरत
कांप रहे थे, हांप रहे थे

❐ आज अचानक
एक परिचेहरा, साअत ले
मेरे चेहरे से बे रंग कफन सरका कर
मेरे कान में सरगोशी की
मेरी आंख में झांक के बोली
उठ और देख
तेरे दिल की बंजर धड़कन में, कितना प्यारा स्याह गुलाब खिला है

❖ ❖ ❖

❐ उस घडी से पहले जब
मेरी आंख का जादू
मेरी जुमबिशे अबरु
कैदियों के दिन फेरे
उस घडी से पहले जब
मेरा हाथ उठने पर
जनता जनारधन बढं कर
कत्लगाह को घेरे
उस घडी से पहले जब
कट गिरे तुम्हारा सिर
आओ मेरी आंखों पर
हाथ बांध लो अपने

- सुनो!
  कि कब्ज़ा था वक्त पर जिनका
  दिन गिने ज़ा चुके हैं उनके
  शुमार सिर्फ उनकी आख़रि शब का रह़ गया है
- सुनो!
  कि सेलाबे वक्त की तुन्दो तेज़ मौजें निगल गई हैं
  वो सब सलीबें जो दामने अर्से मकाफ़ात में गड़ी गई थीं
  नई सलीबें थामने से—
  ज़मी की सख़्ती ने साफ इनकार कर दिया है
  फलक ने अहकामे ह़ब्स जारि किये थे जितने
  ह़वाओं ने उनको पुर्ज़ा पुर्ज़ा उड़ा दिया है
  खलाओं ने उनका ज़र्रा ज़र्रा उचक लिया है
  फिज़ाओं ने उनकी मौत पर मोह़र सब्त करके
  सदाबहारों की रूत का ऐलान कर दिया है
- सुनो!
  मेरी ज़ुबां काटने से पह़ले
  कि जो आपने सुना है, मेरी ज़ुबां से
  सुनो!
  कि समझा है आपने जिसको मेरी तकदीर
  वो आपके शह़र की दिवार पर लेख है
  मैं तो सिर्फ उसको पढ रह़ा था।

- हाथ में हाथ न दे
  आंख न खोल
  रास्ता देख के चलना तो सभी जानते हैं
  आ उसी तरह चलें
  आंखें मुन्दे हुए, बे सिमतो जहत
- फ़ासला बीच में जितना है
  इसी तरह रहे
  बेजहत उठते हुए क़दमों की
  चाप चुपचाप सुनें, और यह अन्दाजा करें
  दूरो नज़दीक में कुर्बत का खला कितना है
  हम जो एक जान वहम हैं, हम हैं
  मुश्तरक कितना, जुदा कितना है
- मोड़ बे सिमत सही
  राह ख़तरनाक सही
  जबरं की खाई में गिर जाने का ख़ौफ़
  सख़्तो सफ़फाक़ सही
  हम हैं अब इतनी बुलन्दी पे के अब
  हम अगर गिर भी गये जबर की गहराई में
  इस क़दर बर्फ़ पड़ेगी हम पर
  तह बतह, साल ब साल, अश्क ब अश्क
  मौत के लम्हे जां बख़्श तक

जिस्म महफ़ूज़ रहेंगे अपने
ख़ून जम जाएगा ऐसे की तमन्नाओं की
कोई नस, कोई रगोरेशा न गल पाएगा
वक्त की खाई में मदफून भी होंगे फिर भी
वक्त का ज़ोर न चल पाएगा

❑ मौत से रगे जां तक फासला ही कित्तना है
एक सोच, इक लमहा, दिल की एक धड़ंकन को
रोक ले तो मिट जाए
मैं बगुलए सहरा
रेगे गर्म पर लरजां
तेज धूप में उरिया
तू पहाडं की चोटि
अब्रे हुस्न में रक्सां
बर्फ़े रिज़ंक में पिनहां
इतनी दूर कौन आए

❖ ❖ ❖

मुझे हर एक बात की ख़बर है
जो हो चुकी है—
जो हो रही है—
जो होने वाली है—
आज लेकिन—
मैं सिर्फ इस बात के भंवर में उतर रहा हूं
जो होने वाली है
जिसको सिरगोशीयों का इक बेकरां समन्दर
उगलने वाला है
कारवां जिसका अब हिकायत की सरज़मीनों पे चलने लगा है
जिसको हर दास्तां गले से लगाने वाली है
जिसकी हां में हर एक हां हां मिलने वाली है

आओ लोगों।
तलब के साहिल पर, ख़ामोशी की दबीज़ चादर
लपेट कर सोने वाले लोगों
शायद अन्दोह के अन्धेरे में, ख़ून की ख़ारदार चादर
लपेट कर रोने वाले लोगों
सूनो! कि जो बात होने वाली है
उसका आगाज़ हो रहा है
उठो और अपने लहू लहू होंट
मेरी आवाज के होठों पर रख दो

तुम्हारे ये आंसू
जो मुझे देखकर तुम्हारी लरज़ती पलकों पे रुक गये हैं
मैं चुन चुका हूं
वो सारे दुःखड़े, वो सारे किस्से, वो सारे अफसाने
जो तुम्हारे थिरक्ते होंठों पे रुक गये थे
मैं सुन चुका हूं
मुझे ख़बर है तुम्हारी बरबादियों की मजबूरियों की
लेकिन
तुम्हीं कहो अब शिकस्ते दिल के सिवा रहा क्या है अपने बस में
बस अब ये कुछ ढूंढती ये कुछ चाहती निगाहें
जो लड़खड़ा कर तुम्हारी आंखों से मेरी आंखों में आ गई है।

❖ ❖ ❖

ये झाड़ी जिसकी आग़ोश में
मिली है मुझे पनाह
है इतनी घनी और ऊंची कुत्तों के साथ
स्वयं भी अगर शिकारी आएँ
मुझ तक पहुंच न पाएँ
और ये झुकी चीलें जो मेरे सिर पर मंड़लाएँ
तान के अपने खूनीं पंजे गौता अगर लगाएँ
मुझको छूने से पहले वो कांटों में फंस जाएं
खून से तर हूं, ख़ाक बसर हूं, दर्द से चूर हूं मैं
घायल हूं, बेबस हूं, उड़ने से मजबूर हूं मैं
आंखों में दम अटका है
फिर भी मसरूर हूं मैं

- दिवारे ख्याल से उतर कर - ढलते हुए साये शामे ग़म के
  फिर सहने सकूं पे छा गये हैं - फिर दीप जले हैं चश्मे नम के
  बादल न अगर घिरें तो शायद
  यादों का भी चांद चमके
- वे दिन जो तुम्हारे साथ गुज़रे - हर रोज़ इसी तरह ढले हैं
  पलकों पे चिराग आंसूओं के - हर रोज़ इसी तरह जले हैं
  इस पर भी नकूशे पाए उल्फत
  लगता है जैसे मिट चले हैं
- अब और जवाब ख़त में तुमको - ए सुबह जमाल क्या लिखूं मैं
  जिन्दा हूं बरंगें बर्गे शाख़ - फुरक्त का मआल क्या लिखूं मैं
  अब दिल भी नहीं है दोस्त मेरा
  अब दर्द का हाल क्या लिखूं मैं

दिल की किश्ती कि बचती सम्भलती हुई
साहिले ग़म के नज़दीक पहुंची ही थी
फिर भटक कर खुले समन्दर में आ गई

❏ प्यार के शहर का शोर फिर दब गया
याद की बस्तियां फिर परे हो गई
ग़म के साहिल पे जलती हुई मशअलें
जाने कब खत्म हो ये वफ़ा का सफर
ये सदा की मुख़ालिफ हवा का सफ़र

क्या लिखूं?
क्या लिख सकता हूं तेरी मौत पे
तेरी मौत कि मेरी मौत है
अपनी मौत पर अपना नोहा किसने लिखा है?
लेकिन मैं यह सब कुछ कैसे सोच रहा हूं
मैं तो तेरे साथ मरा था
मैं तो तेरे साथ फूंक दिया गया था

ज़मीं के सीनए सदचाक पर ख़िज़ा ही रही
बहार बीत गई गुम्बदों पे मंड़राकर
जलाए थे जो थकी मांदी आरज़ूओं ने
वो दीप बुझ गये ख़ूनी हवा से घबराकर
उदास राहगुज़ारों पे यास लिपटी है
लहूं में लिथड़े हुए ज़र्द पांव फैलाकर
नए वतन के मसीहाओं कुछ इलाज करो
फराज़े तख़्त पे बैठे न हाय हाय करों

कदम कदम पे दिले ना सबूर कहता है
फरोगे दर्द से बोझल है चश्मे उम्रे रवां
न जाने कब से सितारों के अनगिनत आंसू
फलक के पेरहने नील पर हैं रक्सकनां
न जाने कौन सी जानिब, रवाना है कब से
निकल के चश्मये फ़ितरत से जूए कहकशां
ये इन्तज़ारे मुसलसल न जाने कब टूटे?
ज़मीं पे कोई सितारा गिरे तो जां छूटे

मुद्दत से खामोश खड़ा था दुःख का परबत
आन की आन में जाग उठी है सोई ज्वाला
चटख चटख कर, टूट टूट कर कई चट्टानें
लुढक लुढक कर, उछल उछल कर लाखों पत्थर
जीवन की बर्फीली झील में आन गिरे हैं
लहरें, इतनी लहरें, इतनी मुज़तर लहरें
पहले कब देखी थी दिल ने
इस दिल इस दिवाने दिल ने

सब्ज़ घने जंगल से निकल कर इक पगडंडी
लहराती, बलखाती मुझसे आन मिली है
मैं रस्ता हूं
तपते, जलते, रेतीले मरुस्थल का रस्ता
देखें
कौन किसे भरमाए
देखें
कौन किसे ले जाए

एक बदली, एक दिन, कुछ इस तरह
टूट कर बरसी कि इक सूखा पेड़
मुद्दतों से जिसके विरां जिस्म पर
कोई कोपंल, कोई पत्ती भी कभी फूटी न थी
सब्ज़ शाखों, लाल फूलों की रदा में छुप गया
किसपे गुज़रा मुझसे पहले
ऐंसा रगीं हादसा

तुझसे शिकवा हो तो हो किस बात का
मैं तो खुद कातिल हूं अपनी ज़ात का
तुझसी कितनी ही फिरोज़ा शम्माओं से
मेरा रिश्ता है फक्त इक रात का

❒ तुझको क्या, खुद मुझको है मेरी तलाश
मैं वफूरे शौक का खामियाजा हूं
अपनी हस्ती की खंड़हर मेहराब में
अपनी ही खोया हुआ आवाज़ा हूं
तुझसे शिकवा हो तो हो किस बात का
मैं तो खुद कातिल हूं अपनी ज़ात का

वापसी की आस अब मुझसे न रख
लौट कर अब मैं नहीं आ पाऊंगा
गर यही आलम रहा उफ्ताद का
जाने मैं किस राह में रह जाऊंगा

- अब मुझे मंजिल की ख्वाहिश ही नहीं
अब मैं अपना आप ही गहवारा हूं
जिन्दगी के दश्त पुरआशोब में
मैं बगुले की तरह आवारा हूं
मेरे वीरां हल्कए आगोश में

- चीख़ती तिनहाईयों को देखकर
मौत की परछाईयों को देखकर
ख़ौफ़ से महबूत हैं लरज़ीदा हैं,

❖ ❖ ❖

बन्द गली में घूम के जाने वाले झोंकों
मेरे घर के खुले किवाड़ों से टकराओ
दरवाज़ों के उतरे चहरों से मत चिपको
गहरे नीले रेशम के पर्दों - लहराओ
दिवारों पर सजी तस्वीरों - उतरो
अलमारि में सोई हुई किताबों - आओ
तिनहाई भी मुझे एकेला छोड़ गई है
आओ और मेरे जलते पहलू में सो जाओ

वो सर्द झोंका
जो मेरे हमराह रात भर घूमता रहा है
सुबह के हंसते ही मुस्कराकर, नज़र बचाकर
तेरी तरह दूर हो गया है
बड़ी रफाकत, बड़ी मुहब्बत से जाते जाते
तेरी तरह वो भी मेरी पलकों में
चन्द मोती परो गया है
ये चन्द मोती परो गया है
ये चन्द मोती, ये चन्द कतरे, ये चन्द आंसू
कि उम्र भर की वफ़ा शआरी का निषर्कश है
न जान देवा है और न जान लेवा है
इन्हें बहा दूं, इन्हें लुटा दूं कि रोक लूं
चश्मे मुन्तज़र मैं
ये कशमकश, ये स्वाल, ये दुं:ख किसे सुनाऊं
रिफाकतों से निगार सीना
सिवाए तेरे किसे दिखाऊं।

दर्द थमता भी नहीं
हद से गुज़रता भी नहीं
भूल के तुझको अजब हाल हुआ है दिल का
सालहा साल से दिल
भरता हुआ घाव है
डूबती है कोई हसरत न उभरती है उम्मीद
दुःख के सागर में
न ठहराव है और न तुफान है
दूर तक धुंध का माहौम सा कजराव है
साहिले चश्म पे तारे हैं न मोती हैं न अश्क
सोच का हाथ है, अहसास का पत्थराव है
डूबती भी नहीं सीधी भी नहीं होती है
ड़म्र की लहर पे जां, उल्टी हुई नाव है
सांस रुकता भी नहीं
ठीक से चलता भी नहीं
भूलकर तुझको अजब हाल हुआ है दिल का

मेरे वतन में
प्यारे वतन में
बसने वाले प्यारे लोगों
रोने वाले, हंसने वाले सारे लोगों
हंसते होंठों पर
सजल नेत्रों में
कृपा दृष्टि में
ज़ुल्म के युग में
ख़ुशी की महफ़िल में
ग़म की गोष्ठी में
हर सूरत में
हर मौसिम में
आज के दिन को ज़िन्दा रखना
जब तक आज का दिन ज़िन्दा है
हम ज़िन्दा हैं

❖ ❖ ❖

रेज़ा रेज़ा होकर गिरती
थर थर करती
इक दिवार का साया
कड़ी धूप में
अजब रूप में
मेरी जानिब आया
मैंने उसको
उसने मुझको
सीने से लिपटाया
धूप ढली
तो शामे वफ़ा ने
अजब सवाल उठाया
मुझसे और
दिवार से पूछा
किसने किसे बचाया
वो तो थी दिवार
सो चुप थी
और मैं बोल न पाया

कद्दावर आईने लेकर

बोनों का मख़्लूत जलूस अभी गुज़रा है

लम्बे लम्बे बालों का इक दानिश्वर

बाज़ीगर के बांसपर चढ़कर

गर्दन की सब नसें फुलाकर चीख़ रहा है

औने पौने आदमियों से ये मख़्लूक़ कहीं बेहतर है

इस पर हंसते हंसते पूरे आदमियों के जबड़े दुखने लगते हैं

बिजली की तेज़ी से आकर जीप रुकी है

ड़ी.एस.पी. ने थानेदार को हुक्म दिया है

दानिश्वर के बांस की, अपने ड़ंड़े से लम्बाई नापो

बांस नाप कर

थानेदार का ड़ंड़ा दानिश्वर की गर्दन नाप रहा है

दानिश्वर हांप रहा है

कांप रहा है

मेरा वजूद
मेरी सोच की पनाह में है
और अपनी सोच पे किस दिन था इख़्तीयार मुझे
ये मेरे दर्द की दलदल
जो मेरी राह में है
इसी में कूद के जाना है अपने पार मुझे

❐ ये टहनियां
जो मेरे सिर पर सरसराती हैं
उछलके उनको पकड़ भी लिया तो क्या होगा
शजर सफ़र का मेरे बोझ से गिरेगा नहीं
लिखा सरिश्त का
तदबीर से नहीं मिटता
मेरे ज़मीर में जब ख़ाक है तो मैं कैसे
गले में अपने सजा लूं सलीब सोने की
हविस के होठों पे किस तरह अपने लब रख दूं
ख़ुदी को कैसे गिराऊं तलब के बिस्तर पर

❐ ये बात मुझसे अबद तक नहीं है होने की
मैं आज अपने जिगर गोशो को बताऊंगा
कि आधी रात को जब उनको भूख खाती है
सदाऐं आती हैं जब मुझको उनके रोने की
मैं अपने कानों में शिशा ऊंड़ेल देता हूं

वो पूछते हैं कि–

बाबे मक्तल पर

दार पर चढ़कर मरने वालों के नाम किसने लिखे हैं

हिसारे जिन्दा पे खूं के लफ़्ज़ों से

किसने पैग़ामे सुबह लिखा है

कौन फैला रहा है अफवाह रोशनी की?

ज़वाल के वक्त कौन नारे बुलन्द करता है

कौन बेहस घरों के दर खटखटा के कहता है

सो न जाना

अन्धेरा बढ़ते ही

गहरी काली फौज के रस्तों में खाईयां कौन खोदता है

वो कौन हैं जो वतन के पुर अमन भेड़ियों की

गुफा पे शबखूं मारते हैं।

❑ उन्हें अभी मेरी अकर्मण्ता पर शक है

कि अतीत में

मक़्तल के दरवाज़े पे दार पर चढ़के मरने वालों के

नाम मैं लिखता रहा हूं

और जिन्दा की दिवार पे ख़ून के लफ़्ज़ों में

सुबह नौ का पैग़ाम मैं लिखता रहा हूं

और अब भी बस्ता अलिफ़ में है दर्ज नाम मेरा

शब जीन्दादारों
शब कट चुकी है
फुरक्त के मारो
पौ फट चुकी है
सुबह तमन्ना, सपनों की पाली
होंठों पे मल कर
आंखों की लाली
सिर पर सजाकर
सुरज की थाली
हाथों में लेकर किरनों की ड़ाली
बामे उफ़क पर
चढ़ने लगी है ज़ीना ब ज़ीना
ख़ल्के खुदा में
बढने लगी है सीना ब सीना
सहने ज़मीं पर
सांपों का ड़ेरा
शब का संपेरा
ज़ालिम अंधेरा
दो एक पल में
दौरे सितम की
बाहों में बाक़ी सिर्फ एक पल है
उठो ज्यालो

ये बल निकालो
बरसों की जागी
आंखों पे रखी
बाहें हटालो
सदियों की भीगी
पलकों से आंसू कब पौंछ ड़ालो
गर्दन उठा लो
पेकारे शब में
राहे तलब में
जो कुछ छिना है
जो कुछ लुटा है
वापिस मिलेगा
मिलकर रहेगा
हर चाक दिल का सिल कर रहेगा
रुए शफक से
हैरत तो जाए
सुरज ज़रा सा ऊपर तो आए
काली फिज़ा की
बुढ़ी सदा की
ज़हरी हवा की
सरगोशीयों में हरगिज़ न आना
चारों तरफ़ है साज़िश बला की
धोका न ख़ाना

जहां मैं खड़ा हूं
वहां कोई रस्ता, कोई जादा
किसी सिमत को भी तो जाता नहीं है
कहां मैं खड़ा हूं
ये कोई भी मुझको बताता नहीं है
ज़रा देर पहले—
उफ़क पर शफ़क की हसीं उंगलियों ने
जो साअत बशारत की सूरत लिखी थी
स्याह रंग लम्हों की फौजे ज़फर मौज
नेज़ो पे उसको ड़ठा ले गई है
निगाहे मनाज़ल तलब घूमकर भी
जहां से चली थी वहीं आ गई है
रहे चश्मे ग़म में—
मुसाफत की मारी हुई, जुस्तजुओं के तलवों
से रिस कर लहू जम गया है
तमन्ना का हर काफिला थम गया है
सहर, शाम, शब, सबकी सब
एक सी हैं
सरे अर्सा करब ठहराऊं किसको?
कि दिन रात, चांद, सूरज भी काले हैं
दिखलाऊं किसको
स्याहि ने जो दाग दिल को दिये हैं
अन्धेरे ने जो जुल्म जां पर किये हैं

मेरे अच्छे वतन, मेरे प्यारे वतन
तू ही मेरा लहू, तू ही मेरा बदन

तेरा ही दान है, तारे साज़े नफ़स
तेरी ही देन है, मौजे बादे सबा
मेरा अनवान तू, मेरी पहचान तू
तू ही मेरी खबर, तू ही मेरा पता

मेरे सुख, मेरे दुःख, मेरा मन, मेरा तन
तेरे होने से है, मेरा हर बांकपन
मेरे अच्छे वतन, मेरे प्यारे वतन
तू ही मेरा लहू, तू ही मेरा बदन

जिस क़दर चाहे, तारीक हो जाए शब
जिस क़दर चाहे, शबख़ून मारें सितम
तेरी इज़्ज़त न जाएगी, दिल से मेरे
तेरी उल्फ़त न होगी, कभी मुझमें कम

तेरी मदहत में, मेरा कलम, मेरा फन
ता क़यामत रहेगा, यूं ही नग़मा ज़न
मेरे अच्छे वतन, मेरे प्यारे वतन
तू ही मेरा लहू, तू ही मेरा बदन

अपने सीने के भी, तेरी धरती के भी
ज़ख़्म जहदो अमल से सिये जाऊंगा
तेरी गलियों में भी, तेरी सरहद पे भी

रौशनी के लिये ख़ूं दिये जाऊंगा
आसमां का न बदलेगा जब तक चलन
होगी जब तक न सुबह तरब ज़ू फगन
मेरे अच्छे वतन, मेरे प्यारे वतन
तू ही मेरा लहू, तू ही मेरा बदन

ह़ोश में आख़िर कब आएगा, मन को ज़रा झंझोड़ो भी
अब ये बन्धन तोड़ो भी
बरखा वो बरखा है ज़िसकी
झड़ीयां बढ़ती रह़ती हैं
आसूं वो मोती हैं ज़िसकी
लड़ीयां बढ़ती रह़ती हैं
दु:ख वो काली रैन है जिसकी
घड़ीयां बढ़ती रह़ती हैं
याद है वह ज़ंजीर की जिसकी
कड़ीयां बढ़ती रह़ती हैं
पल पल बढ़ती दर्द की इस ज़ंजीर से
अब मुख न मोड़ो भी
अब ये बन्धन तोड़ो भी

❒ जाने भी दो भूल भी जाओ
जो बीती सो बीत गई
मैं तो मान गया हूं - तुम भी मानो
दुनिया जीत गई
यूं भी सारी उम्र निभेगी
अब जग से रीत गई
वो मुंह़ ज्यानी जो थी
ह़म दोनों की बीत गई
बालों में चांदी आ चमकी, पतिया लिखनी छोड़ो भी
अब ये बन्धन तोड़ो भी

हरे भरे लहराते पत्तों वाला पेड़
अन्दर से किस दरजा बोदा
कितना खोखला हो सकता है
मुझसे पूछो!
मैं इक ऐसे ही छतनार के नीचे बैठा
इसकी छांव से अपने सफर की
धूप का दुखड़ा भूल रहा था
आने वाले वक्त की ठंडी, गीली मिट्टी रोल रहा था
अपने आप से बोल रहा था
मैं भी कितना खुशकिस्मत हूं
जीवन की सुनसान डगर पर
मेरे कितने यार खड़े हैं पेड़ की सूरत
इतने में इक झोंका आया
ये झोंका चांदी की कान से होकर आया था
एक ही पल में
पेड़ की छाल ने रंगत बदली
एक ही पल में
हर पत्ते की शक्ल हुई
मिट्टियाली - गंदली
शां शां करती शाखों में एक ज़हरीली सरगोशी जागी
छांव छंट कर पेड़ के तने की जानिब भागी

दिल यह मन्ज़र देखके सहमा, कांपा, रोया
चारों ओर से उठती, इक अन्जाने दुःख की धूल में खोया
ज़हर सा इक रग रग में समाया
इतने में इक और झूमता झोंका आया
यह झोंका खुदगर्ज़ी के को हसार पे मंड़ला कर आया था
बस इतना ही याद है मुझको
कैसे और कब पेड़ गिरा, ये पेड़ से पूछो
मुझे निकालो
इस बोदे और खोखले पेड़ के नीचे दबकर
मेरे साथ मेरा अहसास भी मर जाएगा
जो भी यह मंज़र देखेगा
ड़र जाएगा
देखनेवालों को इस ख़ौफ से
इस सदमे, इस ग़म से बचालो
मुझे निकालो
आईन्दा मैं हर छतनार को
अपना यार नहीं समझूंगा
कभी कभी मिल जाने वाली छांव को
प्यार नहीं समझूंगा।

❖ ❖ ❖

बाल कृष्ण मुज़तर

परम्परा

वर्ण	-	ब्राह्मण गौड़
गोत्र	-	भारद्वाज
वेद	-	शुक्ल यजुर्वेद
प्रवर	-	त्रिप्रवर
शाखा	-	वाजसनेय माध्यंदिन
गृहसूत्र	-	पारस्कर
श्रौत्रसूत्र	-	कात्यायन
शासन	-	सहल
कुल देवता	-	भगवती दुर्गा

वंश वृक्ष

श्रीमंत राऊ जी
↓
श्रीमंत कुन्दन लाल जी
↓
श्रीमंत बसन्त लाल जी
↓
श्रीमंत तुलाराम जी
↓
श्रीमंत त्रिप्रवर जी
↓
श्रीमंत राजगुरु बुलाकी राम जी
↓
राजगुरु श्रीमंत नानक चन्दबावरेजू
(1800 ई. - 1847 ई.)
↓
प्रातः स्मरणीय धर्मालंकार श्रीमंत अम्बादत्त जी
संस्थापक राजमहल ईस्टेट (1835 ई. - 8 अक्तुबर 1895 ई.)
↓
तपोधन श्रीमंत शंकरलालजी स्वंय सिद्ध
(नवम्बर 1864 ई. - 22 अगस्त 1919 ई.)
↓
पुण्य श्लोक कर्मयोगी श्रीमंत राजाराम जी
निर्माता राजमहल ईस्टेट (15 सितम्बर 1882 ई. 3 सितम्बर 1970 ई.)
↓
बालकृष्ण मुजतर (2 अक्तूबर 1921-)

↓	↓	↓
स्व.कुमार अपराजित	कुमार परीक्षित	कुमार संजय
(18 जून 1954-17 अक्तूबर 1988)	(8 दिसंबर 1955-)	(6 जून 1957)
	↓ जनमेजय	↓ अनिकेत
	(1 फरवरी 1990-)	(19 अक्तूबर 1988-)

बाल कृष्ण मुजतर कृत सम्पादित साहित्य

1. जय हो जवाहर लाल की
2. सोजे वतन
3. दामे ख्याल
4. दामे निगाह
5. लावा
6. एक राजस्थान
7. जमहूरी सोशलईजम
8. गिरती दिवारें
9. कुरुक्षेत्र एक सांस्कृतिक परिचय
10. विजयपत्र (ज़फरनामा)
11. कुरुक्षेत्रा दर्शन
12. तपीशे शौक
13. शामे मयकदा
14. रज़मनामा
15. कुरुक्षेत्र राजनीतिक अध्ययन
16. महफिल
17. दूसरा कदम
18. अहमदबख्श थानेसरि की रामायण
19. शोक सभाएं
20. पथ प्रदीप
21. तज़मीमे कलामे गालिब
22. गजरा
23. नीति ग्रथों के अमर कण
24. ग़लिमपसिज़ आफ कुरुक्षेत्र
25. हरुफे आखिर
26. बज़्मे मुशायरा
27. गीता टीका
28. महाभारत युद्ध के अट्ठारह दिन
29. श्री स्थाण्वष्टकम्
30. ताके नशीयां
31. कुरुक्षेत्र की तारीख़
32. गुगा पीर
33. महक
34. कुतबुलकुतब जलालुद्दीन
35. राजा हसन खाँ मेवती
36. 26 म्यूजिम आफ इंडिया
37. चमन चमन के फूल
38. अलगोज़ा
39. 1857
40. डा. राम मनोहर लोहिया व्यक्ति और विचार
41. दर्द आया है दबे पांव
42. फूल लाखों बरस नहीं रहते
43. कुरुक्षेत्र का मान चरित्र
44. विरोध में उठा हाथ
45. लेक्चर नोटस ओन सलेकटिड़ पोयमज़
46. म्हारो प्रणाम बांके बिहारी जी
47. दस्तावेज़
48. चन्दन
49. गीता सारांश
50. छप्पना काल
51. सिख राज के अंतिम दिन

सम्पादक

मंजिल	एशिया
राही	मज़दूर आवाज़
दस्तक	नयामार्ग
बज़्मे ख्याल	चट्टान
बढ़ते कदम	

बाल कृष्ण मुज़तर

x x x x x x